वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य का विकास

एम.डी. गुरव

हिंदी विभाग, के.एल.ई. जी. आई. बागवाड़ी कॉलेज, निपाणी।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263452

ABSTRACT:

यह शोधपत्र वैश्वीकरण के युग में हिंदी साहित्य, विशेषकर उपन्यास साहित्य के विकास, भाषा और संस्कृति पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करता है। यह महानगरीय जीवन में बढ़ी हुई असुरक्षा, अस्थिर जीवनशैली, मानवीय संवेदनशीलता के ह्रास और युवा वर्ग की समस्याओं को ममता कालिया, मालती जोशी, और कृष्णा सोबती के उपन्यासों के माध्यम से दर्शाता है। वैश्वीकरण ने भले ही तकनीकी उन्नति लाई हो, पर इसने उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा दिया है, जिससे नाते-रिश्ते और मानवीय मूल्य कमज़ोर हुए हैं। यह शोध हिंदी भाषा की बढ़ती वैश्विक पहचान और साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के संरक्षण पर भी बल देता है।

KEYWORDS:

वैश्वीकरण, हिंदी उपन्यास, मानवीय संवेदना, उपभोक्ता संस्कृति, नारी विमर्श.

वैश्वीकरण में साहित्य, संस्कृति और भाषा:

वैश्वीकरण में जो सामाजिक, सांस्कृतिक, जनमानस की भाषा में जो बदलाव का स्वरूप दिखाई दे रहा है। आधुनिक तकनीकी पृष्ठभूमि के धरातल पर साहित्य के आयाम में भी बदलाव का चित्रण किया गया है। परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को इस शोधपत्र में ममता कालिया, मालती जोशी, कृष्णा सोबती जी के उपन्यास के आधार पर महानगरीय समाज में भय, असुरक्षा, अस्थिर जीवन शैली का परिदृश्य तथा मानवीय संवेदनशीलता का अभाव पलपल दृष्टिगत हो रहा है। बेरोज़गारी और व्यवस्था के कारण विकास के नाम पर आज हम ऐसी सभ्यता के निर्माण में शामिल हैं, जहाँ संवेदनाएँ नित्य क्षीण होती जा रही हैं। सहयोग और संबंध एक झटके में ख़तम हो रहे हैं। दो पीढ़ियों के बीच बदलाव और टकराव की स्थितियों का चित्रण शोधपत्र में चित्रित है।

वैश्वीकरण का मतलब है विश्व का एकीकरण। विश्व भर की संस्कृतियाँ आपस में आदानप्रदान से घुलतीमिलती हैं। भारत की संस्कृति और संस्कार विश्व में श्रेष्ठतम हैं, विश्वविख्यात हैं। हिंदी भाषा विश्व में अहम भूमिका निभा रही है। भारत देश में ऐसे नायाब हीरे, हिंदी साहित्य के शिरोमणि थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य को बुलंद किया। हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध बनाकर नई पहचान दी है। आज हिंदी भाषा देशविदेशों में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाई है। वैश्वीकरण का साहित्य आज उदारीकरण की कोख से जन्म ले रहा है। संस्कृति की परंपरा को लेकर आगे बढ़ रहा है। मीडिया की भूमिका सर्वाधिक शक्तिशाली है। आज रंगीन दुनिया में सभ्यता के मुखौटे के बीच संस्कृति का अभाव खटक रहा है। नातेरिश्ते में बदलाव का स्वरूप दिख रहा है। नित्य जीवन में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से समाज में मानवीय संवेदना लुप्त हो गई है। हिंदी साहित्य में पिछले दो दशक से वैश्वीकरण के बारे में जो चर्चा चल रही है, आज विश्व एक ग्लोबल कमरे में परिवर्तित हो गया है। वैश्वीकरण ने आर्थिक जगत को प्रभावित करने के साथसाथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक जगत में अद्‌भुत बदलाव लाया है। उस यथार्थ को सशक्त वाणी देने के प्रयास में हिंदी भाषा को बाजारीकरण की दुनिया में शस्त्र के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। विज्ञापनों की दुनिया में "हिंदी भाषा" प्रभावशाली दायित्व निभा रही है।

वैश्वीकरण में उपन्यास साहित्य का विकास:

"उपन्यास मध्यवर्ग समाज का महाकाव्य रूप होता है" 1। आज भाषा का बदला हुआ स्वरूप पलपल देख रहे हैं, लेकिन कहीं हद तक मानवीय संवेदनाओं पर भी ठेस पहुँच रही है। हिंदी साहित्य का वैश्वीकरण के युग में जो विकास कार्य जारी है। विभिन्न संस्कृति के शब्दों, अंग्रेज़ी के हाय, हैलो, ओके, गुडबाय आदि शब्दों का हिंदी साहित्य में प्रयोग हो रहा है। साहित्य में रूपांतरित शब्दों का अनुकरण हो रहा है। आधुनिक हिंदी साहित्य का विभिन्न भाषा में अनुवादित साहित्य का दर्शन हो रहा है, जैसे बंगाली, मलयालम, अंग्रेज़ी, तेलुगु, मराठी, कन्नड भाषा में अनुवादित है। वैश्वीकरण का साहित्य में जो मानव मूल्य हैं, वह लुप्त हो रहे हैं। संयुक्त परिवार बिखर कर टूट चुके हैं। परिवार के नातेरिश्तों के, सब संबंध खोखले लग रहे हैं। इसमें बाजारीकरण, उदारीकरण का घुसपैठ हो गया है। अपनेपन की भावना का अभाव

पलपल खटक रहा है। वैश्वीकरण में संपर्क साधनों के द्वारा अद्भुत उन्नति तो की है। वैज्ञानिक तकनीकी का साम्राज्य विश्व भर में फैल गया है। घंटों का काम मिनट में नहीं सेकंड के अंदर ही हो रहा है। कॉरपोरेट जगत में वैचारिक स्तर पर मानवीय मूल्यों का अभाव दिख रहा है। महानगरीय जीवन में औद्योगीकरण, बाजारीकरण का स्वरूप दिखाई दे रहा है। इसमें युवा वर्ग महानगरीय जीवन में पीसते हुए भी नज़र आ रहे हैं। कॉरपोरेट जगत में वैचारिकता के स्तर में जो अजनबीपन, अकेलापन, बच्चों का मनोधैर्य दुर्बल होता नज़र आ रहा है, क्योंकि बच्चे को मातापिता उनको इस तरह के माहौल में पालकर बड़े किए हैं कि वह संघर्ष जीवन से दूर होते जा रहे हैं, और जब संघर्ष का सामना करने की नौबत उनके सामने आती है तो आजकल के बेटे छोटीमोटी परेशानी, दिक्कत से खुदकुशी का रास्ता अपना रहे हैं। इस समस्या को भी वैश्वीकरण में हम देख रहे हैं।

उपन्यास साहित्य और संस्कृति:

वैश्वीकरण के युग में युवकों के लिए दुनिया का जो स्वरूप है, वह इतना तेज गति से दौड़ रहा है, वह खुद भी भागदौड़ की जिंदगी में खोए हुए दिखाई दे रहे हैं। महानगरीय के यहाँ उनका अपना अस्तित्व बहुत छोटा महसूस हो रहा है। इस संदर्भ पर महात्मा गांधीजी ने अपना महत्वपूर्ण अभिप्राय अभिव्यक्त करते हैं कि "आज तो शहरों का बोलबाला है और वह गाँव की सारी दौलत खींच लेते हैं, इनमें गाँवों का ह्रास और नाश हो रहा है।" 2

इसका उदाहरण हम हिंदी की लेखिका कृष्णा सोबती का उपन्यास जिंदगीनामा में पंजाब की धड़कन है, जिसमें विशेष जाति के जीवन का संपूर्ण परिदृश्य चित्रित है। जिंदगी की कुरूपता, मानवीय संबंधों और व्यवहारों, असंख्य परतें एक साथ हैं। वहाँ की मिट्टी में सोंधी गंध है। संस्कृति में लोककथाएँ, लोकनृत्य, नदीनाले, खेतखलिहान से लेखिका को जकड़े हैं। यही संस्कृति का आकर्षण इस उपन्यास का मूल विषय है। इस तरह पंजाब की रीतिरिवाज को, परंपराओं को, भारतीय गाँव जीवन को दर्शाया है।

"ममता कालिया" का उपन्यास "दौड़ उपन्यास" में देखते हैं, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के नेतृत्व में दुनिया के हमारे युवा वर्ग कार्यरत हैं, जो

आईटी क्षेत्र कह सकते हैं। आज वैज्ञानिक तथा संचार टेक्नोलॉजी के चमत्कार आविष्कारों ने विश्व को छोटेबड़े राज्यों से आपस में इस तरह जोड़ दिया है, एकदूसरे पर वह निर्भर रहे बिना जीवन चला ही नहीं सकते। कारण वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने सर्वाधिक सदमा मानव की भावात्मक स्तर पर पहुँचाया है। आज व्यक्ति और समाज मानवीय भाव से निरंतर दूर होते जा रहे हैं। हिंदी के अत्यंत सशक्त उपन्यासकार "जैनेन्द्रकुमार जी का" "त्यागपत्र" उपन्यास में संवेदना और संबंधों में बदलाव का स्वरूप देख सकते हैं। मृणाल की दुनिया अलग पहचान की साक्ष्य देती है, तभी अपने सगे संबंधों को पहचानने से इंकार कर देती है इस संदर्भ में लेखक के विचार इस तरह हैं कि "व्यक्ति, व्यक्ति अवश्य रहे, पर उसके व्यक्तिवादी चिंतन में भी सामाजिक दृष्टिकोण का रहना अनिवार्य है" 3।

इसी तरह "अलका सरावगी" का उपन्यास "ब्रेक के बाद"। इस उपन्यास में विषय का ताना इस तरह बुना गया है। यह उपन्यास कॉरपोरेट जगत की चकाचौंध के बीच देश की एक तिहाई जनता को कुत्ते की तरह ज़िंदगी बिताते हुए दिखाया गया है, जो देश की सबसे बड़ी विडंबना है। इसमें कॉरपोरेट जगत के चित्रों को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश किया है तथा पाठक के सामने एक नया आयाम को लेकर आया है। वहीं दूसरी तरफ बाज़ारवाद से व्यक्ति को केवल एक वस्तु के रूप में देखा है, जो अपना माल बेचने तक मतलब रखता है। मानवीय संवेदनाएँ इस तरह लुप्त होते हुए दिखाई दे रही हैं, मानवतावादी दृष्टिकोण भी गायब होता हुआ दिखाई दे रहा है। उसका एक दस्तावेज बनकर उपन्यास पाठक के सामने आता है। हर एक 6 महीने में नए शहर में नौकरी के लिए भटक रहे हैं, ऐसे अनेक युवा वर्ग का चित्रण यहाँ चित्रित है। आधुनिक स्थिति को ही प्रस्तुत करते हैं। प्रेम का जो स्वरूप है, इसमें यह भी प्रस्तुत किया है। वरना केवल प्रेम की परंपरावादी विचारधाराओं से मुक्ति दिलाता है, बल्कि नारीवादी विमर्श को प्रस्तुत करते हुए नारी की पूर्ण स्वतंत्रता की ओर घोषणा भी करता है। इस तरह वैश्वीकरण का ज्वलंत उपन्यास "दौड़" में आधुनिक युवा पीढ़ी के सामने अनेक सपनों को लेकर जब वह महानगरीय क्षेत्र में पहुँचता है, महानगरीय क्षेत्र नई दुनिया उसके लिए खुली हुई आँगन की तरह होती है, जिसमें कई नए ढंग के रोज़गार, नौकरियाँ उपलब्ध हो गई हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों

ने रोज़गार के नए नौकरियाँ प्रदान करके बाज़ारवाद में उपभोक्तावादी संस्कृति का भी सृजन किया है। यहाँ युवा पीढ़ी आज सफलता से खूब अर्जित की हुई धन, उपभोक्तावादी संस्कृति में जकड़े जा रहे हैं, वह उपभोक्तावादी संस्कृति के शिकार बनते जा रहे हैं, जहाँ मानवीय मूल्य गायब हैं। "पवन" के मातापिता को दो पुत्र होते हुए भी, बुढ़ापे में अकेले जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं। हताश और निराश मातापिता के इन उद्गार से भारी सदमा पहुँचता है। उनके पिता का कहना है कि, "ऐसा ही पता होता तो 25 बरस पहले परिवार नियोजन क्यों करने देते/होने देते। और चार बच्चे 4 एक तो हमारे पास होता, यहाँ पर।" बुढ़ापे में एक पिता का दुःख का चित्रण किया गया है। वैश्वीकरण के युग में अधिक उपन्यास महानगरीय जीवन की समस्याओं का सृजन हो रहा है। बूढ़ों के भावनाओं का आदर नहीं। अपनी संस्कृति के लिए कोई स्थान नहीं। इसीलिए तो पवन, मातापिता से कहता है, "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है, करियर है। मैं ऐसे शहर में रहना चाहता हूँ, जहाँ कल्चर नहीं कंज्यूमर है" 5। "मुझे संस्कृति नहीं उपभोक्ता संस्कृति चाहिए, तभी मैं कामयाब रहूँगा" 6।

इस प्रकार महानगरीय जीवन में चित्रित मालती जोशी का उपन्यास जो, महानगरीय व्यस्तता को भागदौड़ के जीवन का उन्होंने साहित्य में चित्रण किया गया है। स्त्रीपुरुष संबंध को लेकर नए समीकरण प्रस्तुत किया है। आधुनिक मूल्यों को आत्मसात करके नारी स्वतंत्रता को वाणी देकर व्यक्तिवादी चेतना का प्रतिपादन किया है, जैसे "पतिपत्नी के बीच जब संवाद शेष हो जाते हैं, तब दांपत्य जीवन कितना भयावह हो जाता है" 7। और एक उपन्यास "अमावस्या चाँद का"। में सुनीता के पति की मृत्यु कार दुर्घटना में हो जाती है, तभी यशवंत नामक युवक उसे नए मूल्यों का अनुसरण करने में समर्थ प्रस्तुत करता है, जो सुधारवादी विचारों का समर्थक है। विधवा सुनीता का जीवनसाथी बनने के लिए वह आजीवन इंतजार में है। इस तरह इसमें विधवा नारी की संघर्षमय जीवन के साथ उसका प्रकाशमान आशावादी जीवन भी इस उपन्यास में रेखांकित किया गया है। वैश्वीकरण के दौड़ में शिक्षित नारी का स्वाभिमान प्रबल भावनाओं को जन्म दिया है। इसमें निहित है महिला सशक्तिकरण का चित्र वैश्वीकरण में साकार होता हुआ दिखाई दे रहा है। आज के युग में सामाजिकता का बोध और वर्तमान में बारबार बदलते संबंधों पर बल

दिया गया है। वैश्वीकरण में नौकरी पेशा नारी का चित्रण इन्होंने अनेक उपन्यास में मनोवैज्ञानिक ढंग से सफलता से चित्रित किया गया है। जैसे "सहचारिणी" उपन्यास में नीलम मध्यवर्गीय नारी होकर भी अपने पति को छोड़कर अपना अस्तित्व नए ढंग से सृजन करती है। भूमंडलीकरण की दुनिया में इनकी कृतियाँ अनुभूति की मौलिकता का साक्षात्कार हैं। नई नैतिकता का बोध भी वैश्वीकरण के युग के साहित्य में देखते हैं। दांपत्य जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ दिखाई देता है। आज नारी बुद्धिजीवी वर्ग में समाहित हो गई। अनेक लेखिकाओं ने दांपत्य जीवन से संबंधित समस्याओं को मनोवैज्ञानिक एवं सूक्ष्म विश्लेषण का चित्रण वैश्वीकरण के हिंदी साहित्य में हम देखते हैं। उपन्यास साहित्य में नैतिक मूल्यों का ह्रास, धीरेधीरे होता हुआ दिखाई दे रहा है। वृद्धों की समस्या का भी इसमें चित्रण किया गया है। नैतिक मान्यताएँ साहित्य में बदल रही हैं। वैश्वीकरण वह चीज़ है, जिनके आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक, साहित्यिक आयाम से मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया गया है। इस समय मानव जीवन ऐसी स्थिति में है कि जब लगभग छोटेबड़े समस्त तत्व विभिन्न स्तर पर परिवर्तित हो रहे हैं। इस साध्य संस्कृति मानव जीवन की रूपरेखा ही परिवर्तित की है। वैश्वीकरण के कारण समस्त संस्कृतियाँ धीरेधीरे एक हो गईं और विश्व में संस्कृति रहेगी, जिसमें मानवीय अभाव रहेगा। वैश्वीकरण के साथ जुड़ी हुई तकनीकी के कारण हिंदी में विविध प्रकार का साहित्य प्रकाशित हो रहा है। मनोरंजन, ज्ञानविज्ञान, शोध, शिक्षा परस्पर विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार हो रहा है। साहित्य में हिंदी ने साहित्य अपना समर्थ सिद्ध कर दिया है। हिंदी भविष्य में विश्व भाषा के रूप में भूमिका निभाने में सक्षम हो गई है। साथ ही आज वैश्वीकरण के युग में जो उपलब्ध विभिन्न तकनीकी सुविधाएँ हैं, उन सुविधाओं से हिंदी साहित्य के विकास के लिए सुविधाजनक हो गया है। मानव स्वयं मशीनी युग में खुद भी मशीन बन गया है। हर बात मशीन पर अवलंबित हो रही है। मानव जीवन की व्यवस्था, भागदौड़, दिनबदिन बढ़ता ही जा रहा है। अस्थिर जीवन का चित्र भी वैश्वीकरण के युग में हम देख रहे हैं।

हिंदी भाषा हमारी राजभाषा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की धरोहर की पहचान है। मानव समुदाय में समाज की सभ्यता और संस्कृति के विकास तथा संरक्षण में उसकी भाषा ही महत्वपूर्ण होती है। "स्वयं

भाषा संस्कृति का अंग है"। वहाँ संस्कृति के संरक्षण का सर्वोत्तम संगठन का तथा किसी भी समाज के समुचित विकास के लिए एक विकसित भाषा नितांत आवश्यक होती है। समाज या देश जितना ही सुसभ्य होगा, उसकी भाषा उतनी परिष्कृत होगी। भाषा ही सर्वोत्तम विकास का मूल मंत्र है। जैसे: आज ज्ञानविज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में भाषा को सीखना और सिखाना आसान बना दिया है। आधुनिक काल में हिंदी भाषा संपर्क की भाषा के रूप में अहम भूमिका निभा रही है। साथ ही मानक भाषा, साहित्यिक भाषा, राष्ट्रभाषा, राज्यभाषा, इस तरह विभिन्न विकासात्मक स्तर और आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का विकास क्रम हम देखते हैं। जिस हद तक हिंदी का भंडार बढ़ाना और उसकी उपयोगिता बढ़ेगी, उस हद तक अधिक से अधिक लोग हिंदी का प्रयोजनमूलक सीख कर उसमें हिंदी साहित्य का विकास करने में योगदान देंगे। यही पहला सोपान होता है। इसीलिए तो भारतेंदु जी ने कहा है:

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।" 8

इस तरह हिंदी भाषा की उन्नति से देश की उन्नति स्पष्ट किया है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का एक विशेष स्थान रहा है। इसलिए तो महात्मा गांधी ने उस समय कहा था कि, "प्रत्येक भारतीय स्वभावतः दुभाषी है, वह अंतः प्रांतीय समझबूझ और संपर्क बढ़ाना चाहते थे।" उन्होंने ठीक ही कहा था कि यह तभी संभव है जब अधिक मात्रा में लोग हिंदीहिंदुस्तानी सीखें और बोलें। बिना किसी विशेष सरकारी आश्रय के कई अहिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी वाणिज्य, व्यापार की वृद्धि तथा सिनेमा के प्रचलन से भी इस भाषा के विस्तार को प्रेरणा मिल रही है। राष्ट्रीय हित में हिंदी का संचार है, यह हम गर्व से कह सकते हैं। आज अपने देश का कोनाकोना हिंदी भाषा से, अनेक सोशल मीडिया से परिचित हो गया है। आज हिंदुस्तान का बच्चाबच्चा हिंदी भाषा से परिचित हो गया है। देशविदेशों में हिंदी का अध्ययन हो रहा है। यही भारत की धरोहर है। देश की विविध प्रांतीय तथा प्राकृतिक भिन्नता होते हुए भी एकता और अखंडता बनी हुई है। वैश्वीकरण में हिंदी की एकता और संस्कृति की झलक दिखलाई देती है। भारत की संस्कृति इसमें नैतिकता और आध्यात्मिकता की ऐसी अमृतधारा है, जो विश्व में हमारी सामूहिक चेतना दृढ़ करती है। भारत विश्व गुरु का कार्य भाषा और संस्कृति,

साहित्य के ज़रिए सक्षमता से निभा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. भारतीय मध्य वर्ग और सामाजिक उपन्यास डा. थॉमस पृष्ठ 21
2. मेरे सपनों का भारत महात्मा गांधी पृष्ठ 38
3. त्यागपत्र जैनेन्द्र कुमार उपन्यास पृष्ठ 53
4. दौड़ ममता कालिया उपन्यास पृष्ठ 08
5. दौड़ ममता कालिया उपन्यास पृष्ठ 10
6. दौड़ ममता कालिया उपन्यास पृष्ठ 10
7. सहचारिणी मालती जोशी पृष्ठ 62
8. हिंदी साहित्य का इतिहास

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.